

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : SEPTEMBER 8, 2026



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. विजयनगर साम्राज्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अमर-नायक प्रणाली एक विशुद्ध रूप से सैन्य व्यवस्था थी जिसमें कोई नागरिक या न्यायिक जिम्मेदारी नहीं थी।
2. राय (शासक) ने मंदिर प्रशासन पर सीधा नियंत्रण मुख्य रूप से केवल धार्मिक संरक्षण के बजाय कृषि अधिशेष को केंद्रित करने के लिए प्रयोग किया था।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई भी नहीं
- (d) निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** अमर-नायक प्रणाली, हालांकि इक्ता प्रणाली से प्रेरित थी, लेकिन विशुद्ध रूप से सैन्य नहीं थी। अमर-नायकों के पास उनके क्षेत्रों के भीतर नागरिक, राजकोषीय और कभी-कभी न्यायिक कार्य भी होते थे, हालांकि संप्रभुता 'राय' के पास ही रहती थी।
- **कथन 2 सही है।** विजयनगर शासकों के तहत मंदिर नियंत्रण का एक स्पष्ट आर्थिक आधार था—मंदिर भूस्वामी, नियोक्ता और पुनर्वितरण केंद्रों के रूप में कार्य करते थे, जिससे राज्य को कृषि अधिशेष निकालने और कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में मदद मिलती थी।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सबसे अच्छी तरह से समझाता है कि अपेक्षाकृत छोटे भूमि क्षेत्र को कवर करने के बावजूद उष्णकटिबंधीय वर्षावन वैश्विक जैव विविधता में अत्यधिक योगदान क्यों देते हैं?

- (a) पूरे वर्ष निर्बाध सूर्य के प्रकाश के कारण उच्च शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता

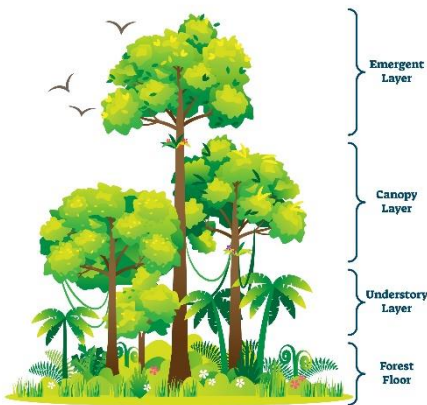
- (b) ऊर्ध्वाधर परतों (vertical strata) में 'निश विविधीकरण' (niche diversification) की ओर ले जाने वाली संरचनात्मक जटिलता
- (c) मौसमी तनाव की अनुपस्थिति जो कम विलुप्ति दर सुनिश्चित करती है
- (d) तीव्र पोषक चक्रण के कारण होने वाली अधिक मृदा उर्वरता

उत्तर: (b)

व्याख्या:

उष्णकटिबंधीय वर्षावनों में असाधारण जैव विविधता का मुख्य चालक **संरचनात्मक जटिलता** है—कई ऊर्ध्वाधर परतें (छतरी/canopy, अंडरस्टोरी, वन तल) असंख्य पारिस्थितिक 'निश' (niches) बनाती हैं।

RAINFOREST LAYERS



- विकल्प (a) अकेले पर्याप्त नहीं है; उत्पादकता स्वतः ही विविधता सुनिश्चित नहीं करती है।
- विकल्प (c) आंशिक रूप से सच है लेकिन निर्णायक नहीं है।
- विकल्प (d) गलत है—उष्णकटिबंधीय वर्षावन की मिट्टी अक्सर पोषक तत्वों से वंचित होती है, क्योंकि पोषक तत्व बायोमास में बंद होते हैं।

प्रश्न 3. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वृद्धिशील पूंजी उत्पादन अनुपात (ICOR) में गिरावट का अनिवार्य रूप से अर्थ कुल कारक उत्पादकता (total factor productivity) में सुधार है।
2. आर्थिक मंदी के दौरान राजकोषीय सुदृढीकरण (fiscal consolidation) विस्तारवादी हो सकता है यदि अपेक्षाओं के माध्यम से निजी निवेश को बढ़ावा (crowded in) मिले।
3. मुख्य रूप से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) द्वारा वित्तपोषित चालू खाता घाटा (CAD), अल्पकालिक ऋण द्वारा वित्तपोषित घाटे की तुलना में कम असुरक्षित होता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** एक निचला ICOR बेहतर पूंजी दक्षता का संकेत देता है, लेकिन यह अनिवार्य रूप से कुल कारक उत्पादकता में सुधार को प्रतिबिंबित नहीं करता है, जो श्रम दक्षता और तकनीकी परिवर्तन पर भी निर्भर करता है।
- **कथन 2 सही है।** 'विस्तारवादी राजकोषीय संकुचन' के सिद्धांत के तहत, जहां विश्वसनीय सुदृढीकरण से निवेशक का विश्वास बढ़ता है।
- **कथन 3 सही है।** अस्थिर अल्पकालिक ऋण के विपरीत, FDI स्थिर और दीर्घकालिक होता है, जो चालू खाता घाटा (CAD) को संरचनात्मक रूप से सुरक्षित बनाता है।

प्रश्न 4. भारत की संवैधानिक और राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. दल-बदल विरोधी कानून केवल उन वोटों पर लागू होता है जो सरकार के अस्तित्व को निर्धारित करते हैं।
2. दसवीं अनुसूची के तहत अध्यक्ष (Speaker) का निर्णय सीमित आधारों पर न्यायिक समीक्षा के अधीन है।
3. मूल संविधान में दल-बदल के आधार पर अयोग्यता के प्रावधान नहीं थे।
4. राजनीतिक अवसरवाद पर अंकुश लगाने के लिए विधायी दल में "विभाजन" (split) की अवधारणा को हटा दिया गया था।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- कथन 1 गलत है। दल-बदल विरोधी कानून पार्टी के निर्देश के विपरीत किसी भी वोट या अनुपस्थिति पर लागू होता है, न कि केवल विश्वास प्रस्तावों पर।
- कथन 2 सही है। किहोतो होलोहन बनाम ज़चिल्हू मामले में दिए गए निर्णय के अनुसार, दुर्भावना (mala fides) या संवैधानिक जनादेश के उल्लंघन जैसे आधारों पर न्यायिक समीक्षा की अनुमति है।
- कथन 3 सही है। 52वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1985 द्वारा दसवीं अनुसूची जोड़ी गई थी।
- कथन 4 सही है। 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 ने प्रायोजित दल-बदल को रोकने के लिए "विभाजन" (split) के प्रावधान को हटा दिया।

प्रश्न 5. कथन (A): भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान मानसून के गहरे दबाव (depressions) की अनुपस्थिति में भी भारी वर्षा होती है।

कारण I (R1): पश्चिमी घाट नमी से भरी हवाओं को ऊपर उठने के लिए मजबूर करते हैं, जिससे पर्वतीय वर्षा (orographic precipitation) होती है।

कारण II (R2): मानसून की अरब सागर शाखा उच्च समुद्री सतह के तापमान के कारण उच्च नमी सामग्री ले जाती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) A सही है; R1 और R2 दोनों सही हैं और मिलकर A की व्याख्या करते हैं।
- (b) A सही है; केवल R1 सही है और A की व्याख्या करता है।
- (c) A सही है; R1 और R2 दोनों सही हैं लेकिन केवल एक A की व्याख्या करता है।
- (d) A गलत है।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- दिया गया कथन (Assertion) सही है—पश्चिमी तट पर भारी वर्षा के लिए अनिवार्य रूप से मानसून के दबाव (depressions) की आवश्यकता नहीं होती है।

- **कारण I (R1)** सही है और पर्वतीय उत्थान (orographic uplift) के माध्यम से तत्काल भौतिक तंत्र प्रदान करता है।
- **कारण II (R2)** भी सही है और प्रचुर नमी के स्रोत की व्याख्या करता है।
- एक साथ मिलकर, R1 और R2 व्यापक रूप से समझाते हैं कि पश्चिमी तट पर तीव्र वर्षा क्यों होती है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न - करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. UIDAI द्वारा आधार शुभंकर (mascot) 'उदय' (Udai) के लॉन्च के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शुभंकर पहल का मुख्य उद्देश्य पहली बार आधार सेवाओं का उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं के बीच अंतिम-मील डिजिटल साक्षरता और विश्वास में सुधार करना है।
2. 'उदय' की शुरुआत इस बात का प्रतीक है कि पहली बार UIDAI ने एक गैर-मानवीय इंटरफ़ेस को वैधानिक प्रमाणीकरण (authentication) की जिम्मेदारियां सौंपी हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई भी नहीं
- (d) निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या:

1. **कथन 1 सही है।** शुभंकर 'उदय' एक संचार और जागरूकता उपकरण है, जिसका उद्देश्य आधार सेवाओं को अधिक मानवीय बनाना, विश्वास बढ़ाना और नागरिक जुड़ाव में सुधार करना है, विशेष रूप से पहली बार या डिजिटल रूप से हाशिए पर रहने वाले उपयोगकर्ताओं के लिए।

2. कथन 2 गलत है। कोई भी वैधानिक या प्रमाणीकरण कार्य नहीं सौंपा गया है। आधार प्रमाणीकरण कड़ाई से आधार अधिनियम और संबंधित नियमों द्वारा शासित रहता है; प्रमाणीकरण में शुभंकरों की कोई कानूनी या कार्यात्मक भूमिका नहीं है।

प्रश्न 2. 'डस्ट एक्सपेरिमेंट' (DEX), जो हाल ही में खबरों में था, उसे सबसे अच्छी तरह से किस पहल के रूप में समझा जा सकता है?

- (a) कलाउड माइक्रोफिज़िक्स और मानसून वर्षा पैटर्न को बदलने में खनिज धूल (mineral dust) की भूमिका को मापना
- (b) सैटेलाइट-आधारित LIDAR का उपयोग करके औद्योगिक प्रदूषकों के सीमा पार आवागमन की निगरानी करना
- (c) दीर्घकालिक मृदा नमी प्रोफाइलिंग के माध्यम से मरुस्थलीकरण के रुझानों का अध्ययन करना
- (d) शहरी सीमा परतों (boundary layers) में सूक्ष्म कणों (particulate matter) के स्वास्थ्य प्रभावों का आकलन करना

उत्तर: (a)

व्याख्या:

DEX का ध्यान यह समझने पर केंद्रित है कि खनिज धूल एरोसोल (aerosols) बादल निर्माण, विकिरण संतुलन और मानसून की गतिशीलता को कैसे प्रभावित करते हैं।

- विकल्प (b) और (d) प्रदूषण निगरानी से संबंधित हैं, न कि धूल-जलवायु जुड़ाव से।
- विकल्प (c) भूमि क्षरण से संबंधित है, जो DEX का मुख्य उद्देश्य नहीं है।

प्रश्न 3. पंखुड़ी (PANKHUDI) पोर्टल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह महिला एवं बाल विकास से संबंधित योजनाओं के परिणामों पर नज़र रखने के लिए कई मंत्रालयों के डेटा को एकीकृत करता है।
2. पोर्टल सीधे जिला-स्तरीय कार्यान्वयन एजेंसियों से जुड़ी वास्तविक समय (real-time) की शिकायत निवारण प्रणाली को सक्षम बनाता है।
3. पंखुड़ी (PANKHUDI) का प्राथमिक उद्देश्य भारत द्वारा अनुसमर्थित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के लिए अनुपालन-निगरानी डैशबोर्ड के रूप में कार्य करना है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** पंखुड़ी (PANKHUDI) एक अभिसरण डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करता है, जो परिणामों की निगरानी के लिए विभिन्न विभागों के योजना-स्तरीय डेटा को एकीकृत करता है।
- **कथन 2 सही है।** यह कार्यान्वयन फीडबैक लूप को मजबूत करता है, जिसमें क्षेत्र (field) स्तर पर शिकायत ट्रेकिंग शामिल है।
- **कथन 3 गलत है।** हालांकि डेटा अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टिंग को सूचित कर सकता है, लेकिन पोर्टल का प्राथमिक लक्ष्य घरेलू योजनाओं की निगरानी करना है, न कि संधि अनुपालन।

प्रश्न 4. भारत में बाल विवाह के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बाल विवाह निषेध अधिनियम सभी बाल विवाहों को शुरुआत से ही शून्य (void ab initio) मानता है।
2. NFHS डेटा इंगित करता है कि ग्रामीण महिलाओं की तुलना में ग्रामीण पुरुषों में बाल विवाह के प्रसार में अधिक तीव्र गिरावट आई है।
3. आर्थिक झटके और स्कूल छोड़ने को बाल विवाह की निरंतरता के संरचनात्मक चालकों के रूप में पहचाना गया है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** अधिनियम के तहत, बाल विवाह 'शून्यकरणीय' (voidable) होते हैं, न कि स्वचालित रूप से शून्य, सिवाय विशिष्ट गंभीर परिस्थितियों के।
- **कथन 2 सही है।** आंकड़े पुरुषों के बीच तुलनात्मक रूप से तेज गिरावट दिखाते हैं, जो लैंगिक सामाजिक मानदंडों को दर्शाते हैं।
- **कथन 3 सही है।** गरीबी के झटके, महामारी और स्कूल छोड़ना इस प्रथा को बनाए रखने वाले अच्छी तरह से प्रलेखित कारक हैं।

प्रश्न 5. स्पाइना बिफिडा (Spina Bifida) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह प्रारंभिक भ्रूण विकास के दौरान न्यूरल ट्यूब के अनुचित रूप से बंद होने के कारण होता है।
2. गर्भधारण से पहले फोलिक एसिड का सेवन इसकी घटना को काफी कम कर देता है।
3. स्पाइना बिफिडा को विशेष रूप से एक आनुवंशिक विकार के रूप में वर्गीकृत किया गया है जिसका कोई पर्यावरणीय निर्धारक नहीं है।
4. प्रसव पूर्व स्क्रीनिंग के माध्यम से शीघ्र निदान प्रसवोत्तर प्रबंधन परिणामों में सुधार कर सकता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल दो
- (b) केवल तीन
- (c) सभी चार
- (d) केवल एक

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1, 2 और 4 सही हैं।** स्पाइना बिफिडा एक न्यूरल ट्यूब दोष है, जो फोलेट की कमी से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है, और शीघ्र पता लगने से नैदानिक योजना में मदद मिलती है।
- **कथन 3 गलत है।** इस स्थिति के बहुआयामी कारण होते हैं, जिनमें पोषण संबंधी, पर्यावरणीय और आनुवंशिक कारक शामिल हैं।

प्रश्न 6. ग्रीनलैंड को सबसे अच्छी तरह से इस रूप में वर्णित किया गया है:

- (a) डेनमार्क साम्राज्य के भीतर एक स्वायत्त क्षेत्र जो आर्कटिक और अटलांटिक महासागरों के बीच स्थित है
- (b) आर्कटिक परिषद में स्थायी सदस्यता वाला एक संप्रभु द्वीप राष्ट्र
- (c) पूरी तरह से आर्कटिक सर्कल के भीतर स्थित एक महाद्वीपीय भूभाग
- (d) अंतरराष्ट्रीय संधि के तहत डेनमार्क और नॉर्वे द्वारा संयुक्त रूप से प्रशासित एक क्षेत्र

उत्तर: (a)

व्याख्या:

ग्रीनलैंड डेनमार्क का एक स्वायत्त क्षेत्र है, जो रणनीतिक रूप से आर्कटिक और अटलांटिक महासागरों के बीच स्थित है।

- विकल्प (b) गलत है—ग्रीनलैंड संप्रभु नहीं है।
- विकल्प (c) गलत है—इसका कुछ हिस्सा आर्कटिक सर्कल के दक्षिण में स्थित है।
- विकल्प (d) तथ्यात्मक रूप से गलत है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS - I

प्रश्न 1. भारतीय उपमहाद्वीप की भू-आकृति (physiography) को आकार देने में भू-आकृतिक प्रक्रियाओं (geomorphic processes) की भूमिका का परीक्षण कीजिए। ये प्रक्रियाएं मानवीय गतिविधियों और बंदोबस्त पैटर्न (settlement patterns) को कैसे प्रभावित करती हैं?

नमूना उत्तर:

भारतीय उपमहाद्वीप की भू-आकृति भूगर्भीय समय के पैमाने पर संचालित दीर्घकालिक अंतर्जात (endogenic) और बहिर्जात (exogenic) भू-आकृतिक प्रक्रियाओं का संचयी परिणाम है। अंतर्जात प्रक्रियाओं जैसे कि प्लेट टेक्टोनिक्स, वलन (folding), भ्रंशन (faulting) और ज्वालामुखी ने व्यापक संरचनात्मक

ढांचा प्रदान किया है, जबकि अपक्षय, अपरदन, परिवहन और निक्षेपण जैसी बहिर्जात प्रक्रियाओं ने सतह की विशेषताओं को तराशा है।

यूरेशियन प्लेट के साथ भारतीय प्लेट की टक्कर के कारण हिमालय पर्वत प्रणाली का निर्माण हुआ, जो सबसे प्रमुख भू-आकृतिक विशेषताओं में से एक है। यह निरंतर चलने वाली पर्वत-निर्माण प्रक्रिया न केवल उत्तर भारत के उच्चावच (relief) को परिभाषित करती है, बल्कि मध्य एशियाई ठंडी हवाओं के लिए अवरोध के रूप में कार्य करके और मानसून प्रणाली को आकार देकर जलवायु को भी प्रभावित करती है। इसके विपरीत, प्रायद्वीपीय पठार सबसे पुराने और सबसे स्थिर भू-भागों में से एक है, जो सक्रिय टेक्टोनिक्स के बजाय मुख्य रूप से लंबे समय तक निक्षालन (denudation) द्वारा आकार लेता है।

बहिर्जात प्रक्रियाओं ने भारत-गंगा के मैदानों को बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई है, जहाँ गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों द्वारा जलोढ़ निक्षेपण के परिणामस्वरूप गहरी उपजाऊ मिट्टी का निर्माण हुआ है। ये उपजाऊ मैदान घनी आबादी और गहन कृषि का समर्थन करते हैं, जो भू-आकृति विज्ञान और मानव बस्तियों के बीच मजबूत संबंध को दर्शाते हैं। इसी तरह, तटीय प्रक्रियाओं ने डेल्टा, एस्चुअरी और लैगून जैसी विशेषताएं बनाई हैं, जो मछली पकड़ने, बंदरगाह विकास और व्यापार की सुविधा प्रदान करती हैं।

हालांकि, भू-आकृतिक प्रक्रियाएं कुछ बाधाएं भी उत्पन्न करती हैं। हिमालयी क्षेत्र भूस्खलन, भूकंप और मृदा अपरदन के प्रति संवेदनशील हैं, जो बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे के विकास को सीमित करते हैं। राजस्थान में पवन प्रक्रियाओं (aeolian processes) द्वारा आकार ली गई शुष्क भू-आकृतियाँ पानी की कमी पैदा करती हैं और बस्तियों के घनत्व को प्रतिबंधित करती हैं।

इस प्रकार, भू-आकृतिक प्रक्रियाएं न केवल भौतिक परिदृश्य को आकार देती हैं बल्कि संसाधनों की उपलब्धता, आपदा संवेदनशीलता, कृषि क्षमता और बंदोबस्त पैटर्न को भी निर्धारित करती हैं। भारत में सतत भूमि उपयोग नियोजन और आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए इन प्रक्रियाओं को समझना आवश्यक है।

GS - II

प्रश्न 2. भारत के संघीय ढांचे में राज्यपाल की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। क्या इस पद ने सहकारी संघवाद को मजबूत किया है या कमजोर?

नमूना उत्तर:

भारत की संघीय व्यवस्था में राज्यपाल का पद एक अद्वितीय और अक्सर विवादास्पद स्थान रखता है। राज्य के संवैधानिक प्रमुख के रूप में कल्पित, राज्यपाल से केंद्र और राज्यों के बीच एक तटस्थ कड़ी के

रूप में कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। हालांकि, व्यवहार में, इस भूमिका ने अक्सर संघीय संतुलन और लोकतांत्रिक जवाबदेही पर सवाल उठाए हैं।

संवैधानिक रूप से, राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और वह अनुच्छेद 153-167 के तहत कार्य करता है। जबकि अधिकांश शक्तियों का प्रयोग मंत्रिपरिषद् की सहायता और सलाह पर किया जाना है, विवेकाधीन शक्तियाँ—जैसे कि राष्ट्रपति के लिए विधेयकों को आरक्षित करना, अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करना, और त्रिशंकु विधानसभाओं में मुख्यमंत्री की नियुक्ति करना—व्याख्या के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं।

कई उदाहरणों में, इस पद पर पक्षपातपूर्ण व्यवहार का आरोप लगाया गया है, विशेष रूप से सरकार गठन में, विधेयकों को सहमति देने में देरी, और अतीत में अनुच्छेद 356 के लगातार उपयोग में। इस तरह के कार्यों को केंद्रीय हस्तक्षेप के उपकरण के रूप में देखा गया है, जिससे सहकारी संघवाद कमजोर हुआ है। सरकारिया और पुंछी आयोगों ने इन चिंताओं पर प्रकाश डाला और विवेकाधीन शक्तियों के उपयोग में स्पष्ट परंपराओं और संयम की सिफारिश की।

साथ ही, राज्यपाल एक रचनात्मक भूमिका भी निभा सकते हैं। संवैधानिक तंत्र विफल होने, राजनीतिक अस्थिरता या कानून व्यवस्था बिगड़ने की स्थिति में राज्यपाल संवैधानिक सुरक्षा के रूप में कार्य करते हैं। महामारी या प्राकृतिक आपदाओं जैसे संकटों के दौरान, राज्यपाल केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय की सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

हाल के न्यायिक हस्तक्षेपों, जिनमें शक्ति परीक्षण (floor tests) और समयबद्ध निर्णयों पर सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देश शामिल हैं, ने दुरुपयोग को रोकने का प्रयास किया है। हालांकि, निरंतर अस्पष्टताएं बनी हुई हैं। कुल मिलाकर, जबकि राज्यपाल की संस्था को संघीय एकता को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, इसके कामकाज ने अक्सर केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव पैदा किया है। सहकारी संघवाद को मजबूत करने के लिए राजनीतिक सुविधा के बजाय संहिताबद्ध परंपराओं, नियुक्तियों में पारदर्शिता और संवैधानिक नैतिकता के पालन की आवश्यकता है।

GS - III

प्रश्न 3. चर्चा कीजिए कि जलवायु परिवर्तन भारत के लिए एक गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरे के रूप में कैसे उभर रहा है। इस चुनौती से निपटने के लिए नीतिगत उपायों का सुझाव दें।

नमूना उत्तर:

जलवायु परिवर्तन तेजी से एक गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरे के रूप में उभरा है, जो पर्यावरणीय चिंताओं से ऊपर उठकर आर्थिक स्थिरता, सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय सुरक्षा को सीधे प्रभावित कर रहा है। अपनी विशाल जनसंख्या और पारिस्थितिक विविधता वाले भारत के लिए इसके निहितार्थ विशेष रूप से गंभीर हैं।

बढ़ता तापमान, अनियमित मानसून और चरम मौसम की घटनाएं खाद्य और जल सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करती हैं। कृषि, जो भारत की जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का समर्थन करती है, जलवायु के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। बार-बार पड़ने वाले सूखे और बाढ़ आजीविका को बाधित करते हैं, ग्रामीण संकट को बढ़ाते हैं और पलायन के दबाव में योगदान करते हैं, जिससे संभावित रूप से शहरी अस्थिरता पैदा हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन संसाधन संघर्षों, विशेषकर जल को लेकर, को भी बढ़ावा देता है। पिघलते हिमालयी ग्लेशियर और नदियों के बदलते प्रवाह सीमा पार की नदियों को प्रभावित करते हैं, जिससे जलवायु जोखिमों में एक भू-राजनीतिक आयाम जुड़ जाता है। तटीय कटाव और समुद्र के स्तर में वृद्धि प्रमुख शहरों और बंदरगाहों तथा नौसेना प्रतिष्ठानों सहित महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के लिए खतरा पैदा करती है, जिससे समुद्री सुरक्षा प्रभावित होती है।

आंतरिक रूप से, जलवायु-प्रेरित विस्थापन शासन प्रणालियों पर दबाव डाल सकता है और असमानताओं को बढ़ा सकता है। पहले से ही अस्थिरता और विद्रोह से प्रभावित क्षेत्र अत्यधिक भेद्यता देख सकते हैं, क्योंकि पर्यावरणीय तनाव सामाजिक-आर्थिक शिकायतों को और जटिल बना देता है।

इस चुनौती से निपटने के लिए बहुआयामी नीतिगत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जलवायु-अनुकूल कृषि को मजबूत करना, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों में निवेश करना और राष्ट्रीय सुरक्षा योजना में जलवायु जोखिमों को एकीकृत करना महत्वपूर्ण है। भारत को उत्सर्जन कम करने और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण में भी तेजी लानी चाहिए।

संस्थागत स्तर पर, जलवायु अनुकूलन को विकास नियोजन, आपदा प्रबंधन और विदेश नीति की मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए। जलवायु वित्त, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और डेटा साझाकरण पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण बना हुआ है। इस प्रकार, जलवायु परिवर्तन अब केवल एक दूर का पर्यावरणीय मुद्दा नहीं बल्कि एक मुख्य सुरक्षा चिंता है, जो सक्रिय, एकीकृत और दीर्घकालिक प्रतिक्रियाओं की मांग करती है।

GS - IV

प्रश्न 4. नैतिक नेतृत्व (ethical leadership) से क्या तात्पर्य है? उपयुक्त उदाहरणों के साथ लोक प्रशासन में इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर:

नैतिक नेतृत्व से तात्पर्य व्यक्तिगत या राजनीतिक लाभ के बजाय नैतिक सिद्धांतों, अखंडता, जवाबदेही और सार्वजनिक हित द्वारा नेतृत्व करने के अभ्यास से है। लोक प्रशासन में, नैतिक नेतृत्व लोकतांत्रिक शासन के लिए मौलिक है, क्योंकि सार्वजनिक अधिकारी जनता की ओर से अधिकार का प्रयोग करते हैं।

एक नैतिक नेता ईमानदारी, पारदर्शिता, सहानुभूति और निष्पक्षता जैसे मूल्यों का प्रदर्शन करता है। ऐसा नेतृत्व राज्य और नागरिकों के बीच विश्वास को बढ़ावा देता है, जो प्रभावी नीति कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, एक सिविल सेवक जो निहित स्वार्थों का पक्ष लेने के लिए राजनीतिक दबाव का विरोध करता है, वह निष्पक्षता के सिद्धांत को बनाए रखता है, जिससे संस्थागत विश्वसनीयता मजबूत होती है।

नैतिक नेतृत्व विशेष रूप से विवेकाधीन शक्तियों से जुड़े संदर्भों में प्रासंगिक है। संसाधन आवंटन, कानून प्रवर्तन, या कल्याण वितरण से संबंधित निर्णयों में अक्सर नैतिक दुविधाएं शामिल होती हैं। नैतिक तर्क द्वारा निर्देशित नेता यह सुनिश्चित करते हैं कि परिणाम न्याय, समानता और गरिमा जैसे संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप हों।

ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरण इसके महत्व को उजागर करते हैं। लाल बहादुर शास्त्री जैसे नेताओं ने व्यक्तिगत अखंडता और सादगी का उदाहरण पेश किया, जिसने नैतिक अधिकार को मजबूत किया। प्रशासनिक स्तर पर, 'व्हिसल-ब्लोअर्स' और सुधार-उन्मुख अधिकारी जो भ्रष्टाचार को उजागर करते हैं या सेवा वितरण में सुधार करते हैं, वे क्रियाशील नैतिक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं।

इसके अलावा, नैतिक नेतृत्व संस्थानों के भीतर एक अनुकूल वातावरण बनाता है। जब वरिष्ठ अधिकारी नैतिक व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, तो यह संगठनात्मक संस्कृति को आकार देता है, भ्रष्टाचार को हतोत्साहित करता है और अधीनस्थों को जिम्मेदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

संस्थानों में घटते विश्वास के इस युग में, नैतिक नेतृत्व वैकल्पिक नहीं बल्कि अनिवार्य है। यह कानूनी अधिकार और नैतिक वैधता के बीच की खाई को पाटता है, यह सुनिश्चित करता है कि शासन जन-केंद्रित और मूल्य-संचालित बना रहे।

Current Affairs

प्रश्न 5. माधव गाडगिल को अक्सर भारत में जन-केंद्रित संरक्षण (people-centred conservation) के विवेक के रूप में वर्णित किया जाता है। सतत विकास के संदर्भ में इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर:

भारत में पर्यावरणीय शासन में माधव गाडगिल का योगदान तकनीकी (technocratic), बहिष्करणकारी संरक्षण मॉडलों से जन-केंद्रित, सहभागी स्थिरता की ओर एक प्रतिमान बदलाव (paradigm shift) का प्रतिनिधित्व करता है। उन्हें "जन-केंद्रित संरक्षण के विवेक" के रूप में वर्णित करना पारिस्थितिक लोकतंत्र, विकेंद्रीकरण और सामुदायिक अधिकारों पर उनके निरंतर जोर को दर्शाता है।

पश्चिमी घाट पारिस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल (WGEEP) के अध्यक्ष के रूप में, गाडगिल ने संरक्षण के लिए एक वैज्ञानिक रूप से कठोर लेकिन सामाजिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण की वकालत की। उनकी रिपोर्ट ने स्थानीय स्वशासन, वर्गीकृत पारिस्थितिक संवेदनशीलता और सामुदायिक भागीदारी पर जोर दिया, जो उस प्रभुत्वशाली मॉडल को चुनौती देता है जो अक्सर पर्यावरण संरक्षण के नाम पर स्थानीय आबादी को दरकिनार कर देता है।

गाडगिल के दृष्टिकोण ने मान्यता दी कि आजीविका की चिंताओं और पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को संबोधित किए बिना संरक्षण सफल नहीं हो सकता। उन्होंने तर्क दिया कि प्रकृति के सबसे करीब रहने वाले समुदाय खतरा नहीं बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षक हैं। यह परिप्रेक्ष्य सतत विकास के सिद्धांतों के साथ गहराई से मेल खाता है, जो सामाजिक समानता और आर्थिक व्यवहार्यता के साथ पर्यावरण संरक्षण को संतुलित करना चाहते हैं।

हालांकि, उनकी सिफारिशों को राजनीतिक और औद्योगिक हितों के साथ-साथ विकास संबंधी प्रतिबंधों के डर से कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। आलोचकों ने तर्क दिया कि सख्त पारिस्थितिक जोनिंग बुनियादी ढांचे और आर्थिक विकास में बाधा डाल सकती है। फिर भी, बाद के पर्यावरणीय संकटों—भूस्खलन, बाढ़ और जैव विविधता की हानि—ने गाडगिल की चेतावनियों की प्रासंगिकता को पुख्ता किया है।

जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक क्षरण के समकालीन संदर्भ में, गाडगिल के विचार नैतिक पर्यावरणीय शासन की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, जहाँ विकास के निर्णय अल्पकालिक लाभ के बजाय विज्ञान, लोकतांत्रिक भागीदारी और दीर्घकालिक स्थिरता द्वारा सूचित होते हैं।

इस प्रकार, माधव गाडगिल की विरासत न केवल नीतिगत सिफारिशों में है, बल्कि भारत को यह याद दिलाने में भी है कि पर्यावरण संरक्षण सामाजिक न्याय, स्थानीय सशक्तिकरण और संवैधानिक मूल्यों से अविभाज्य है—जो उन्हें वास्तव में जन-केंद्रित संरक्षण का विवेक बनाता है।